

जीवन साधना का वैज्ञानिक राजमार्ग

कर्मकाण्डों और धर्म का वास्तविक तत्त्वदर्शन

क्रान्तिधर्मी साहित्य - ०७ व ०८ अध्याय पर आधारित

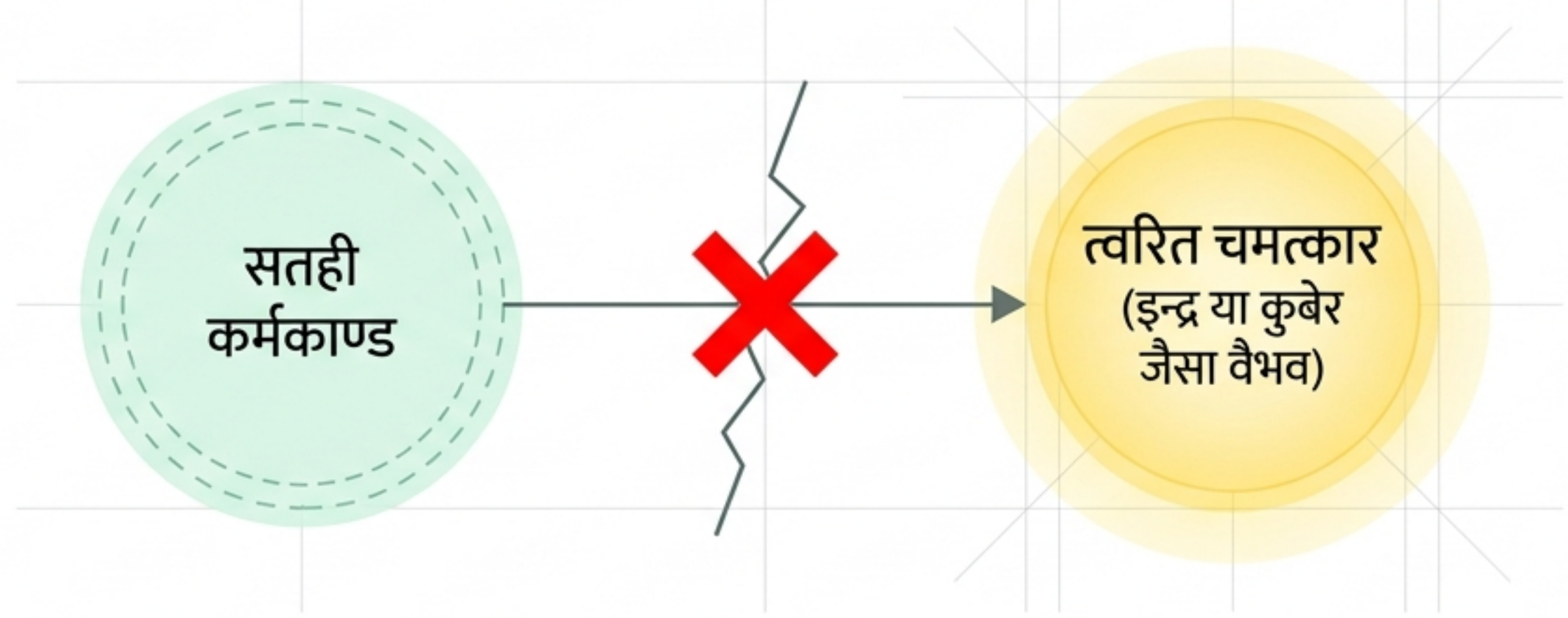
“वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा और आप सबसे कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जान शरीर को मेरे करें।” रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (संस्थापक)
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

अधूरी समझ का भ्रम: शॉर्टकट की चाह



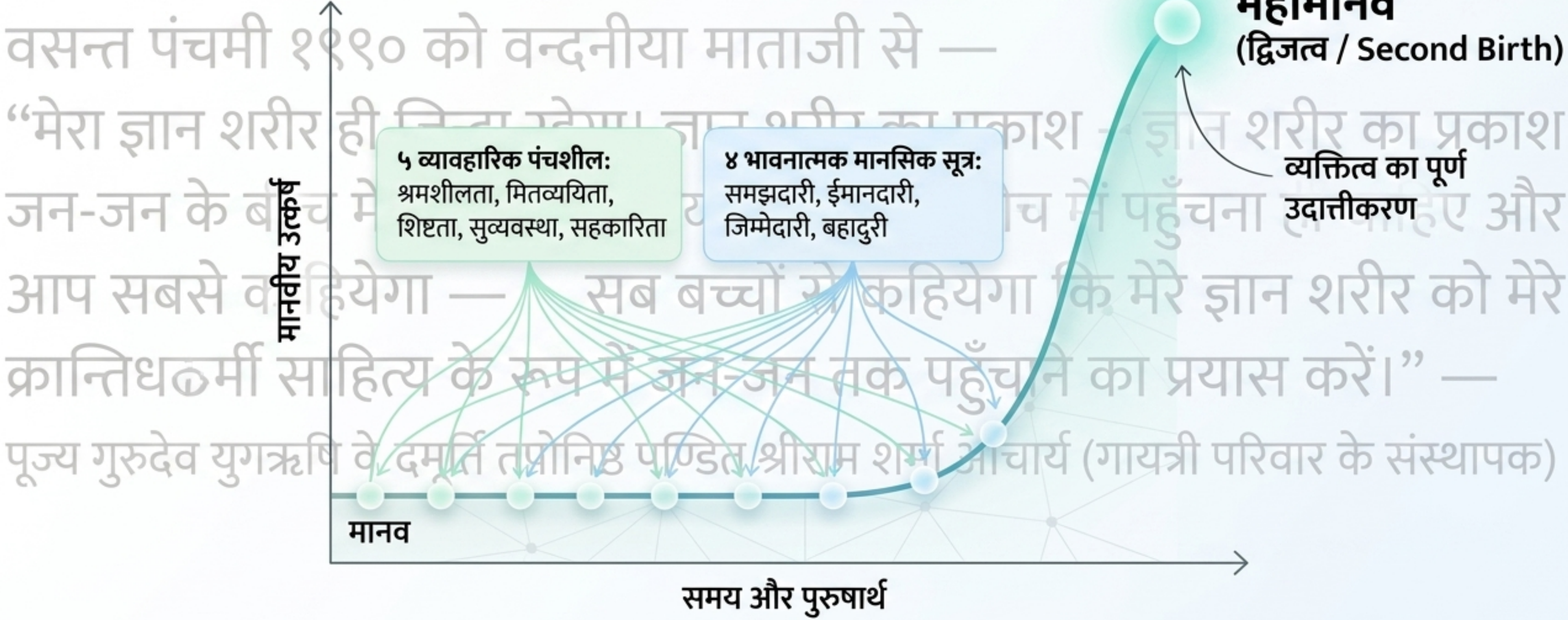
छलांग लगाकर बिना पुरुषार्थ के सिद्धियाँ पाने की ललक अवैज्ञानिक है।

वैज्ञानिक तथ्य

ब्रह्मांड का नियम 'कार्य-कारण' (Cause and Effect) पर आधारित है। बिना साधना (सशक्त प्रयास) के सिद्धि (परिणाम) की चाह केवल एक भ्रम है।

सुनिश्चित राजमार्ग: नौ रत्नों का हार

धर्म बाहरी दिखावा नहीं, बल्कि व्यवहारिक मनोविज्ञान है।



धर्म ज्ञान नहीं, विज्ञान है (धारण करने की प्रक्रिया)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“येरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगक्रषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



निष्कर्ष: धर्म वह है जो 'धारण' किया जाए। ज्ञान को जब तक न्यूरोलॉजिकल स्तर (आदतों) पर उतारा नहीं जाता, वह व्यर्थ है।

प्रतीक पूजा का मनोविज्ञान

ईश्वर निराकार है। प्रतीकों का उपयोग मानव मस्तिष्क की 'फोकस और कंडीशनिंग' (Focus and Conditioning) के लिए किया जाता है।



राष्ट्रध्वज

कपड़े का टुकड़ा नहीं, बल्कि 'देशभक्ति' की भाव-श्रद्धा का प्रतीक है।



प्रतिमा

पत्थर नहीं, बल्कि उत्कृष्ट ईश्वरीय सत्ता (विराट् ब्रह्म) से जुड़ने का मनोवैज्ञानिक माध्यम है।

“

‘वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” ”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

कर्मकाण्ड: भ्रांति बनाम वास्तविकता

बसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

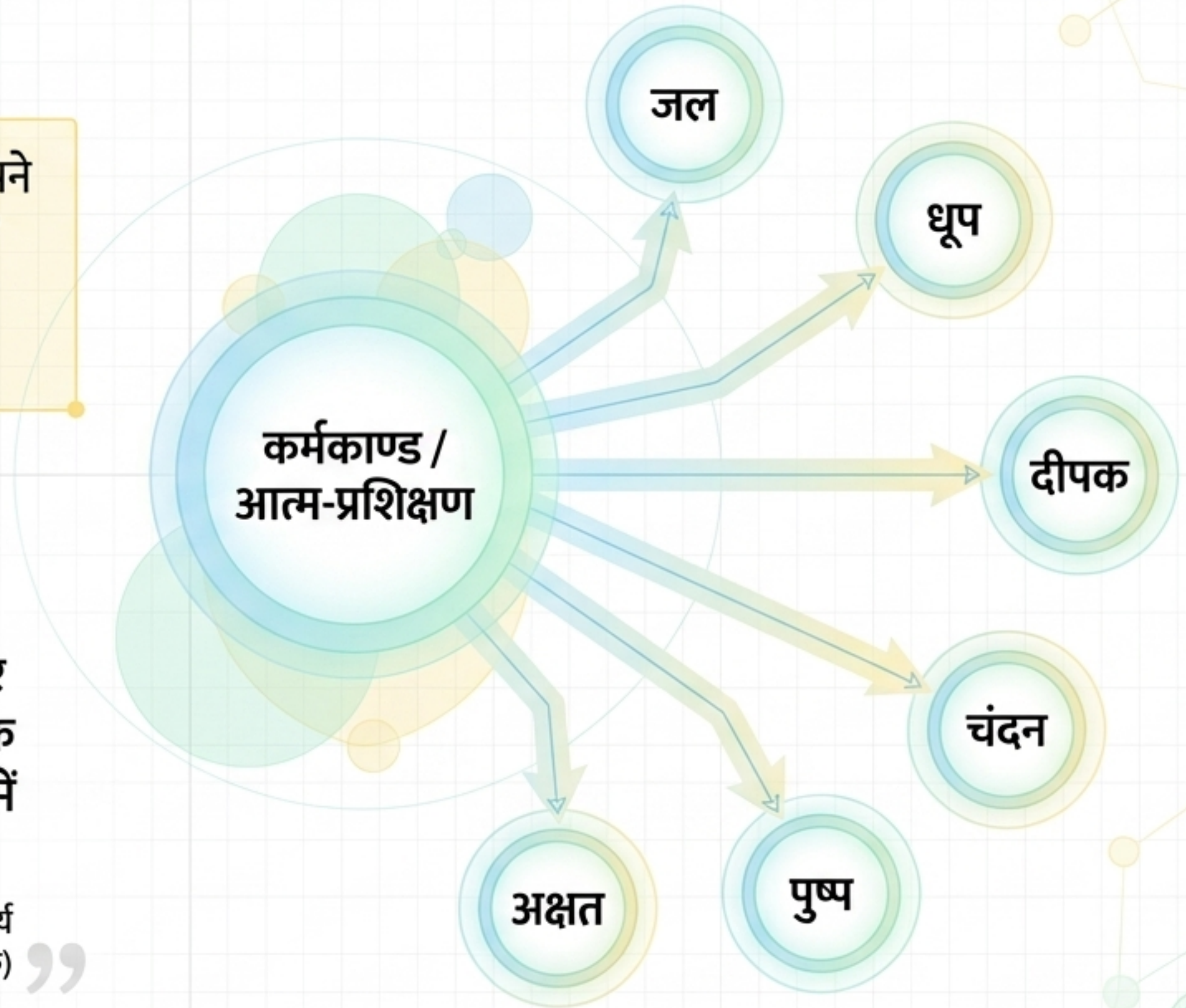
आयाम	भ्रांति	वैज्ञानिक वास्तविकता
उद्देश्य (Purpose)	ईश्वर की खुशामद करना	स्वयं को परिष्कृत करना
प्रक्रिया (Process)	लकीर पीटना (अंधी दिनचर्या)	स्व-संकेत द्वारा अवचेतन को निर्देश
परिणाम (Result)	बिना प्रयास के चमत्कारी वरदान	पात्रता का विकास और आत्म-सुधार

प्रतीकोपासना: आत्म-प्रशिक्षण का ब्लूप्रिंट

पूजा के साधन ईश्वर को देने के लिए नहीं, बल्कि अपने व्यक्तित्व में देवत्व के अवतरण का 'ऑटो-सजेशन' (Auto-suggestion) हैं। फसल काटने के लिए बीज बोना आवश्यक है।

“ वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रात्रिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



संकेतों का विज्ञान: जल और धूप

प्रतीक:
जल

भौतिक गुण:
शीतलता

प्रतीक:
धूप

भौतिक गुण:
सुगन्ध का
विस्तार

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा मेरे आसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगश्रुति वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

व्यवहार परिवर्तन:

→ शांत, सौम्य और संतुलित मनःस्थिति
(Emotional Regulation)

व्यवहार परिवर्तन:

→ अपने आस-पास के वातावरण
को सत्प्रवृत्तियों से भरना

संकेतों का विज्ञान: दीपक और चंदन



प्रतीक: दीपक

भौतिक गुण: प्रकाश

व्यवहार परिवर्तन: अज्ञान का अंधेरा मिटाना; अपने साधनों को समाज के लिए उत्सर्ग करना



प्रतीक: चंदन

भौतिक गुण:
घिसने पर भी महक

व्यवहार परिवर्तन: विकट और कष्टदायी परिस्थितियों में भी अपने प्रमुदित स्वभाव को न छोड़ना (Resilience)

“ वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)’

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिये ही पोखरी
और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञानसे
के मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगश्रुति वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

संकेतों का विज्ञान: पुष्प और अक्षत



प्रतीक:
पुष्प



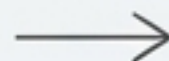
भौतिक गुण:
खिलना



व्यवहार परिवर्तन:
हमेशा हंसते-हंसाते, प्रसन्नचित्त
रहने की प्रकृति अपनाना



प्रतीक:
अक्षत



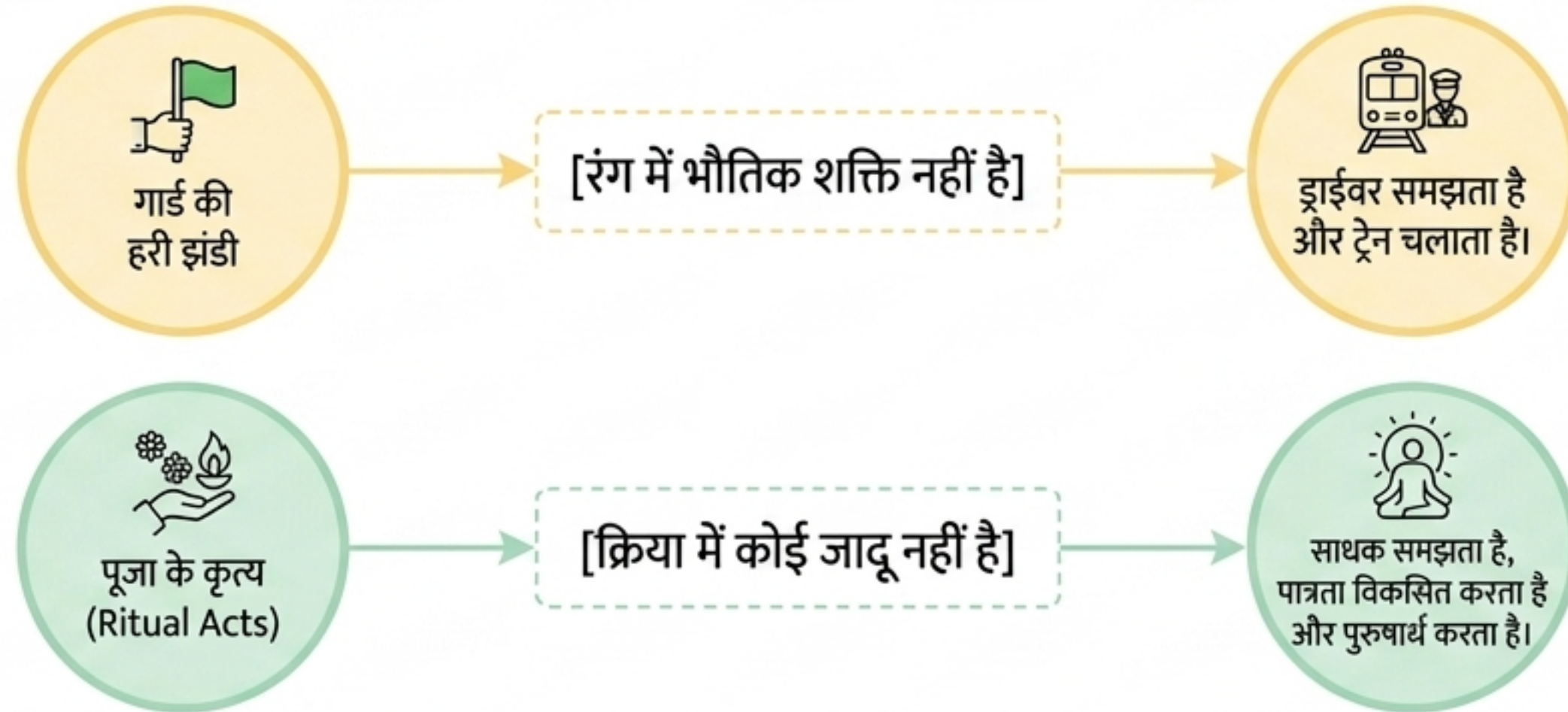
भौतिक गुण:
अखंडता / संपूर्णता



व्यवहार परिवर्तन:
अपने उपार्जन का एक अंश
उत्कृष्ट/दिव्य प्रयोजनों के
लिए नियोजित करना

कर्मकाण्ड केवल सिग्नल हैं

क्रियान्वित करने पर ही व्यवस्था बनती है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

एकात्मता: अद्वैत का विज्ञान

ईश्वर और जीव के मिलन की वैज्ञानिक प्रक्रिया—समर्पण।

वसन्त पंचमी १९९०

“मेरा ज्ञान शरीर ही

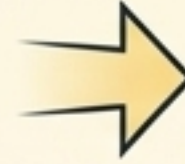


ईंधन (Fuel)

+



अग्नि में आत्मसमर्पण



अग्नि (Fire)

जन-जन के बीच में

मेरे ज्ञान शरीर को



नाला (Drain)

+



नदी में विलय



नदी (River)

— पूज्य गुरुदेव

श्रीराम शर्मा आचार्य



पानी (Water)

+



दूध में घुलना



दूध (Milk)

निष्कर्ष: जब मनुष्य अपने अहंकार (Ego) को मिटाता है, तो उसकी चेतना परमात्मा की व्यापकता को प्राप्त कर लेती है।

भाव संवेदना + वैज्ञानिक दृष्टि = महामानव

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



ईश्वर को खुशामद नहीं, सहयोगी चाहिए।



अपने जीवन को ‘प्रयोगशाला’ बनाएं।



प्रतीक पूजा को आत्म-सुधार का उपकरण समझें।

आह्वान: अपनी मर्जी की पूजा-उपासना छोड़कर महाकाल के सुझाए मार्ग — विवेक-विस्तार — पर चलें।